आशा की लिस्ट

होलोकॉस्ट के दौरान एक महिला ने 2,500 बच्चों को जान कैसे बचाई

जेनिफर

आशा की लिस्ट

होलोकॉस्ट के दौरान एक महिला ने 2,500 बच्चों को जान कैसे बचाई

ओटवॉक, पोलैंड, 1917

इरीना छोटी-छोटी चीजों पर ध्यान देती थी.

उसने देखा कि कुछ लोगों के साथ, दूसरों की तुलना में अलग व्यवहार किया जाता था. इरीना के पिता एक डॉक्टर थे और कभी-कभी वो मरीज़ देखते समय इरीना को भी अपने साथ ले जाते थे. जिस मोहल्ले में वो मरीजों का इलाज करते थे वहां पर बहुत से यहूदी बच्चे थे जो यहूदियों की भाषा येदिश बोलते थे. वे यहूदी मंदिर मे भी जाते थे.

इरीना ने दूसरे लोगों को, यहूदी लोगों पर तानाकशी कसते हुए सुना. इरीना के ज्यादातर पड़ोसी यहूदी बस्तियों से दूर ही रहते थे. पर इरीना अक्सर यहूदी बच्चों के साथ खेलती थी.

"पापा," इरीना ने पूछा. "क्या कुछ लोग सच में दूसरे लोगों से बेहतर होते हैं?"

"इरीना," उसके प्यारे पिता ने कहा. "इस दुनिया में दो तरह के लोग होते हैं - अच्छे और बुरे लोग. इससे कोई फर्क नहीं पड़ता है कि वे अमीर हैं या गरीब, किस धर्म या जाति के हैं. मायने यह रखता है कि वे अच्छे हैं या बुरे."

इरीना के पिता की मृत्यु तब हुई जब वह केवल 7 वर्ष की थी. लेकिन उनके बुद्धिमान शब्द इरीना के साथ हमेशा रहे. वे इरीना के दिल में गहराई से बस गए थे.

"मिस, क्या आपके पास कुछ खाना है?" एक बच्चे ने इरीना से पूछा.

"मेरा बच्चा बीमार है," एक महिला ने गुहार लगाई. "कृपया, क्या आप हमारी कुछ मदद कर सकती हैं?"

"इतने सारे लोगों की इतनी ज़रूरते हैं," इरीना ने सोचा. "एक इंसान भला क्या कर सकता है?"

फिर इरीना ने वो सोचा जो उसके पिता ने उसे बताया था. "अगर कोई डूब रहा हो," पिताजी ने कहा था, "तो उसे अपने हाथ का सहारा ज़रूर दो."
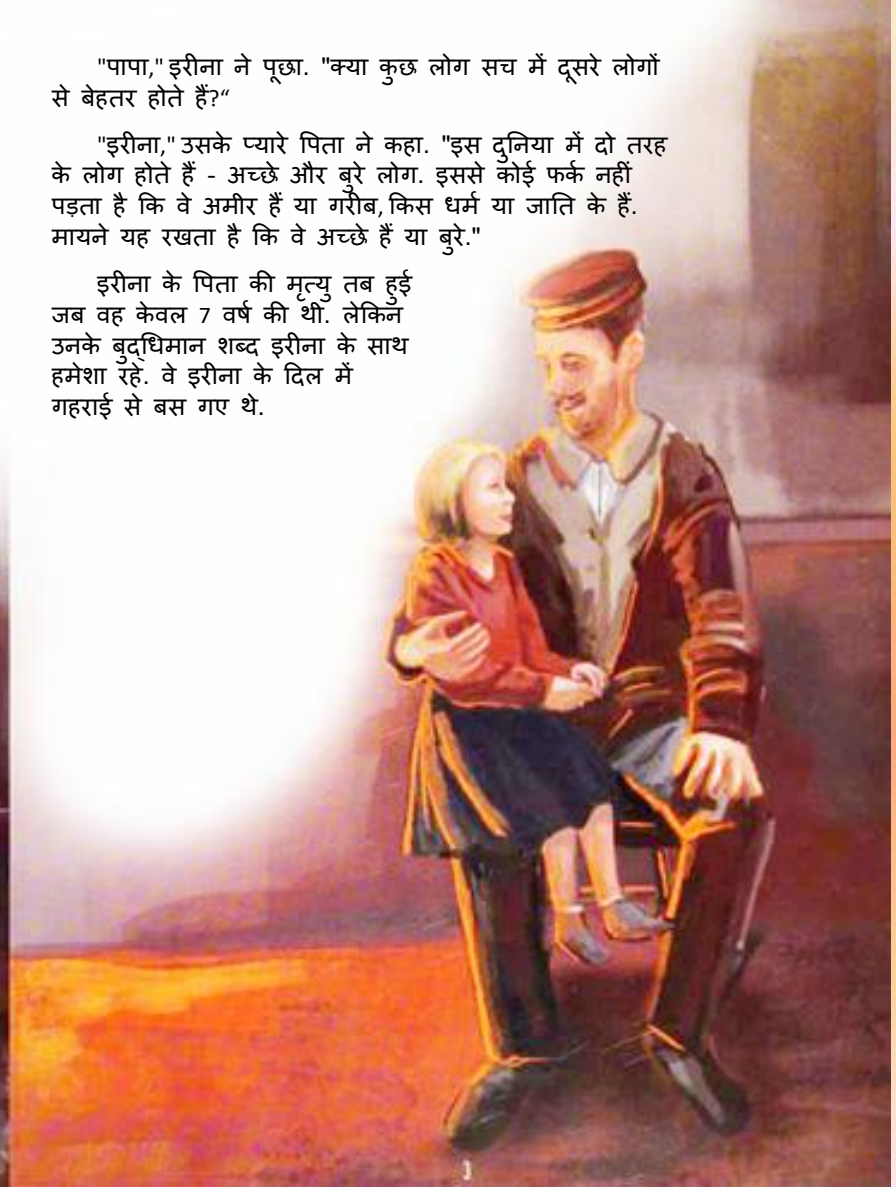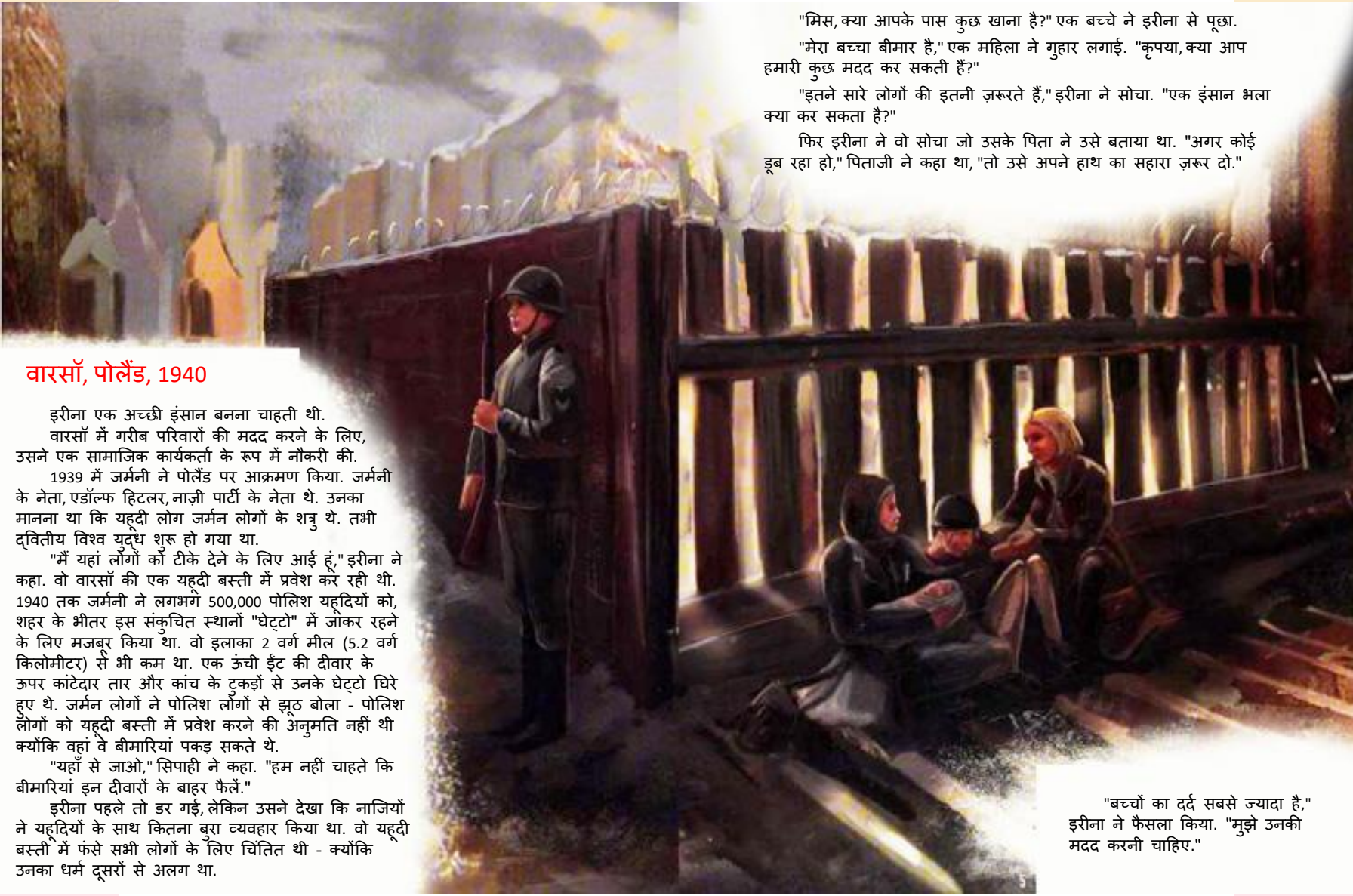
वारसॉ, पोलैंड, 1940

इरीना एक अच्छी इंसान बनना चाहती थी.

वारसॉ में गरीब परिवारों की मदद करने के लिए, उसने एक सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में नौकरी की.

1939 में जर्मनी ने पोलैंड पर आक्रमण किया. जर्मनी के नेता, एडॉल्फ हिटलर, नाज़ी पार्टी के नेता थे. उनका मानना था कि यहूदी लोग जर्मन लोगों के शत्रु थे. तभी द्वितीय विश्व युद्ध शुरू हो गया था.

"मैं यहां लोगों को टीके देने के लिए आई हूं," इरीना ने कहा. वो वारसॉ की एक यहूदी बस्ती में प्रवेश कर रही थी. 1940 तक जर्मनी ने लगभग 500,000 पोलिश यहूदियों को, शहर के भीतर इस संकुचित स्थानों "घेट्टो" में जाकर रहने के लिए मजबूर किया था. वो इलाका 2 वर्ग मील (5.2 वर्ग किलोमीटर) से भी कम था. एक ऊंची ईंट की दीवार के ऊपर कांटेदार तार और कांच के टुकड़ों से उनके घेट्टो घिरे हुए थे. जर्मन लोगों ने पोलिश लोगों से झूठ बोला - पोलिश लोगों को यहूदी बस्ती में प्रवेश करने की अनुमति नहीं थी क्योंकि वहां वे बीमारियां पकड़ सकते थे.

"यहाँ से जाओ," सिपाही ने कहा. "हम नहीं चाहते कि बीमारियां इन दीवारों के बाहर फैलें."

इरीना पहले तो डर गई, लेकिन उसने देखा कि नाजियों ने यहूदियों के साथ कितना बुरा व्यवहार किया था. वो यहूदी बस्ती में फंसे सभी लोगों के लिए चिंतित थी - क्योंकि उनका धर्म दूसरों से अलग था.

"बच्चों का दर्द सबसे ज्यादा है," इरीना ने फैसला किया. "मुझे उनकी मदद करनी चाहिए."

जुलाई 1942 से शुरू में जर्मन सैनिक प्रतिदिन 6,000 से अधिक यहूदी लोगों को रेलगाड़ियों के मवेशी डिब्बों में ठूंसकर ले जा रहे थे. यहूदियों को पता नहीं था कि वे कहाँ जा रहे हैं. ट्रेनें उन्हें ट्रेब्लिंका मृत्यु शिविर ले गईं - जहां नाजियों ने उन्हें मौत के घाट उतारा.
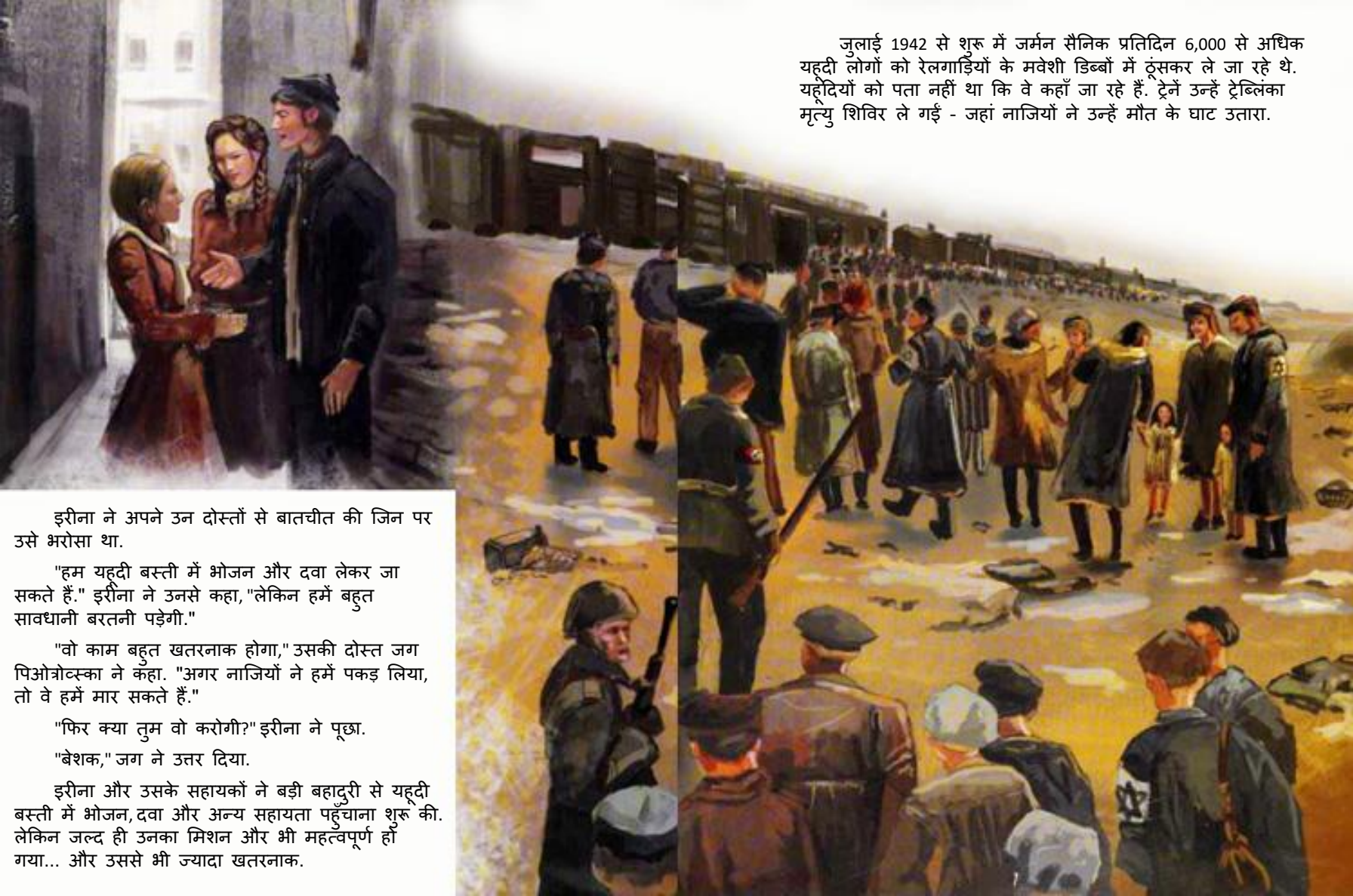
इरीना ने अपने उन दोस्तों से बातचीत की जिन पर उसे भरोसा था.

"हम यहूदी बस्ती में भोजन और दवा लेकर जा सकते हैं." इरीना ने उनसे कहा, "लेकिन हमें बहुत सावधानी बरतनी पड़ेगी."

"वो काम बहुत खतरनाक होगा," उसकी दोस्त जग पिओत्रोव्स्का ने कहा. "अगर नाजियों ने हमें पकड़ लिया, तो वे हमें मार सकते हैं."

"फिर क्या तुम वो करोगी?" इरीना ने पूछा.

"बेशक," जग ने उत्तर दिया.

इरीना और उसके सहायकों ने बड़ी बहादुरी से यहूदी बस्ती में भोजन, दवा और अन्य सहायता पहुँचाना शुरू की. लेकिन जल्द ही उनका मिशन और भी महत्वपूर्ण हो गया... और उससे भी ज्यादा खतरनाक.

इरीना ने आयोजन किया.

इरीना के कई मददगार थे. एक एंटोनी नाम का ट्रक ड्राइवर था. उसे यहूदी बस्ती के अंदर और बाहर ट्रक चलाने की अनुमति थी. पहली बार जब एंटोनी और इरीना ने ट्रक में एक बच्चे को बाहर निकालने की कोशिश की, तो बच्चा रो पड़ा. गेट पर जर्मन सैनिकों ने उन्हें लगभग पकड़ लिया.

अगली बार जब इरीना एक बच्चे को ट्रक में लेने आई, तो उसे आश्चर्य हुआ. आगे की सीट पर एक बड़ा कुत्ता बैठा था.

"यह शेप्सी है," एंटोनी ने कहा. "वो काफी काबिल है और अच्छी तरह से प्रशिक्षित है. हमें अब ट्रक में बच्चों के रोने की चिंता करने की ज़रूरत नहीं होगी," वो फुसफुसाया.

ट्रक सीमा गेट की ओर चला और वहां रुक गया. ट्रक में पीछे एक बच्चा बिलखने लगा. पहरेदार करीब आ गया.

"अरे नहीं!" इरीना ने सोचा. "अब हम निश्चित रूप से पकड़े जाएंगे!"

तभी एंटोनी ने शेप्सी का पंजा थपथपाया. बड़ा कुत्ता ज़ोर से भौंकने लगा, जिससे सिपाही के कुत्ते भी भौंकने लगे. कुत्तों के ज़ोरदार भौंकने ने बच्चे के रोने की आवाज को दबा दिया और फिर गार्ड ने ट्रक को, यहूदी बस्ती के गेट से गुजरने दिया.

जुलाई 18, 1942

इरीना ने एक दरवाजा खटखटाया.

जब दरवाजा खुला, तो उसने एक गहरी सांस ली और वो अंदर घुसी. "यही समय है," उसने कहा.

हेनिया कोप्पेल ने धीरे से अपनी बच्ची को इरीना के बढ़ई के टूलबॉक्स में रख दिया. इरीना ने बेबी बिएटा को देखा - उसका मासूम चेहरा, उसका छोटा शरीर कंबल में लिपटा हुआ था. बच्ची मुस्कुराई. इरीना ने बिएटा के मुंह में दवा का एक बूँद डाल दी ताकि उसे नींद आ जाए. फिर उसने कंबल को ठीक किया, और यह सुनिश्चित किया कि बक्से में हवा के लिए छेद थे.

जैसे ही इरीना ने बक्सा बंद किया वैसे ही उस बच्ची के दादाजी ने बक्से से अंदर कुछ खिसकाया. वो एक छोटा चांदी का चम्मच था जिस पर बच्ची का नाम और जन्मदिन अंकित था: एल्ज़बीटा, 5 जनवरी 1942.

"उसकी माँ और पापा की ओर से एक उपहार," उन्होंने अपनी आंखों के आंसू पोछते हुए कहा.

इरीना ने एक गहरी सांस ली. वो अपना कीमती माल लेकर वारसॉ यहूदी बस्ती में निकली.

इरीना ने और भी दरवाजे खटखटाए.

"कृपया अपने बच्चे को मेरे साथ जाने दें," इरीना ने भीख मांगी "मैं उन्हें बचाने की पूरी कोशिश करूंगी."

"क्या आप हमसे वादा कर सकती हैं कि हमारा बच्चा जीवित रहेगा?" माता-पिता ने इरीना से पूछा.

"मैं आपको एक केवल गारंटी दे सकती हूं कि अगर आपका बच्चा यहाँ रहा, तो शायद वो मारा जाएगा," इरीना ने उत्तर दिया.

जब माता-पिता अपने बच्चे को देने के लिए तैयार होते तब इरीना को यह सोचती कि उस बच्चे को बचाने का सबसे अच्छा तरीका क्या होगा?

"आपका बच्चा छोटा है," इरीना ने सबसे छोटे बच्चों के माता-पिता से कहा. "हम उनकी तस्करी करेंगे... आलू की बोरी के अंदर, ताबूत में छिपाकर, या फिर कूड़े-कचरे की गाड़ी में नीचे छिपाकर."

इरीना के सहायक खुफ़िआ भूमिगत कामों में व्यस्त रहते थे. अक्सर इरीना के सहायक यहूदी बच्चों को, सुरक्षा के लिए सीवर और सुरंगों की भूलभुलैया में से स्वतंत्रता की ओर लेकर जाते थे.

इरीना ने जो बड़े बच्चे बचाए थे उनसे उसने सीधे बात की.

"बहादुर बनो," उसने कहा. "अब से तुम्हारा नाम इसहाक नहीं, तुम्हारा नाम प्योत्र है. अपना नया नाम बार-बार दोहराओ, जब तक तुम्हें खुद विश्वास न हो कि तुम प्योत्र हो. तुम्हें जल्दी से प्रभु यीशू की प्रार्थना याद करो क्योंकि अब से तुम यहूदी नहीं एक कैथोलिक बच्चे हो."

प्योत्र ने प्रभु यीशू की प्रार्थना सीखी और उसका बार-बार अभ्यास किया, जैसे ही उसने प्रार्थना ख़त्म की उसने अपने सीने पर सलीब (क्रॉस) का चिन्ह भी बनाया.

"ठीक है," इरीना ने कहा "अब तुम तैयार हो. चलो, मेरे पीछे आओ."

वे उस प्रांगण में पहुंचे जो यहूदी बस्ती की सीमा से लगा हुआ था. इरीना ने प्योत्र के पुराने कपड़े उतारे और उसे नए कपड़े पहनाए. फिर वे पिछले दरवाजे से निकले और वो यहूदी बस्ती से सुरक्षित बाहर आए.

नवंबर, 1942

इरीना, ज़ेगोटा नाम के एक खुफ़िआ दल में शामिल हुई.

ज़ेगोटा बहादुर पोलिश पुरुषों और महिलाओं का एक गुप्त समूह था जो यहूदियों की सहायता और उन्हें बचाना चाहता था. संगठन ने इरीना को यहूदी बच्चों की मदद करने का भार सौंपा. वो और उसके नेटवर्क के लोग हर दिन बच्चों को यहूदी बस्ती से बाहर निकालते रहे. लेकिन वहां से निकलकर बच्चे गए कहां?

इरीना को बच्चों की देखभाल करने के लिए कई बहादुर लोग मिले. उसे ऐसे पालक परिवार मिले जो छोटे बच्चों को रखने के लिए राज़ी हुए. कुछ बच्चे पोलिश अनाथालयों में रहने के लिए गए, अन्य लोग ईसाई कान्वेंट मठों में गए, जहाँ पर ननों ने उनकी देखभाल की.
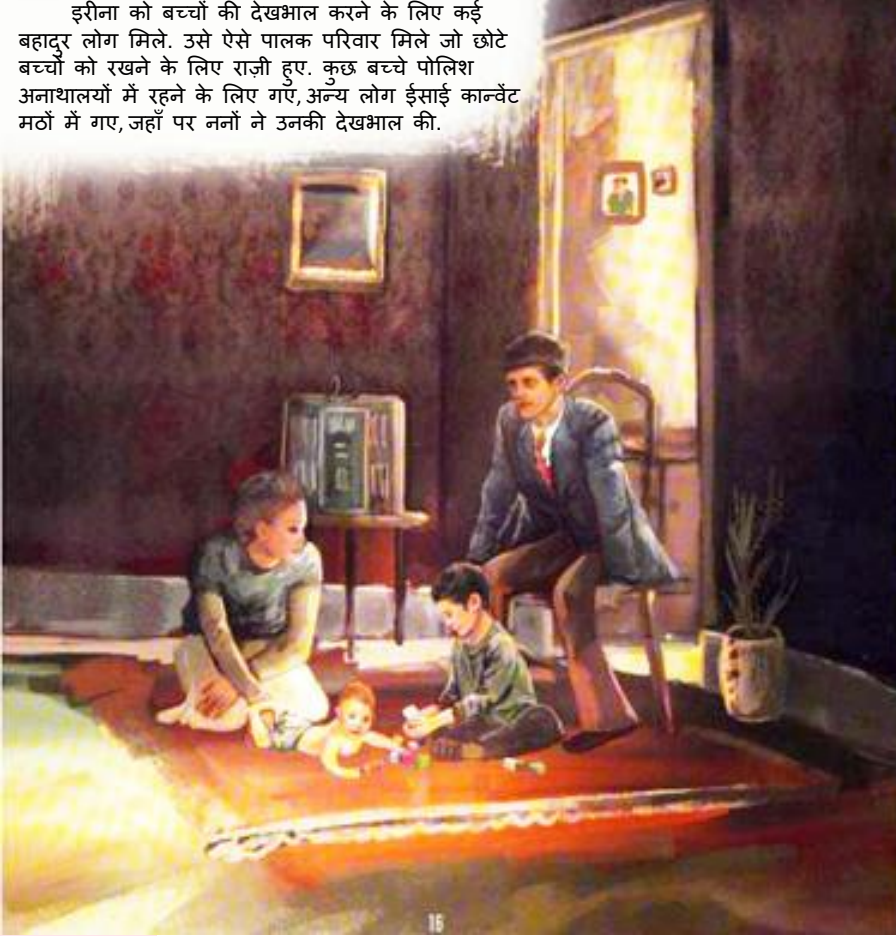
हर कोई जानता था कि अगर वे एक यहूदी बच्चे को छिपाते हुए पकड़े गए, तो उन्हें मौत के घाट उतार दिया जाएगा. लेकिन इन साहसी लोगों ने बच्चों को बचाने के लिए अपनी जान जोखिम में डाली. उन्हें पता था कि वो जो कर रहे थे वो नैतिक रूप से सही था.
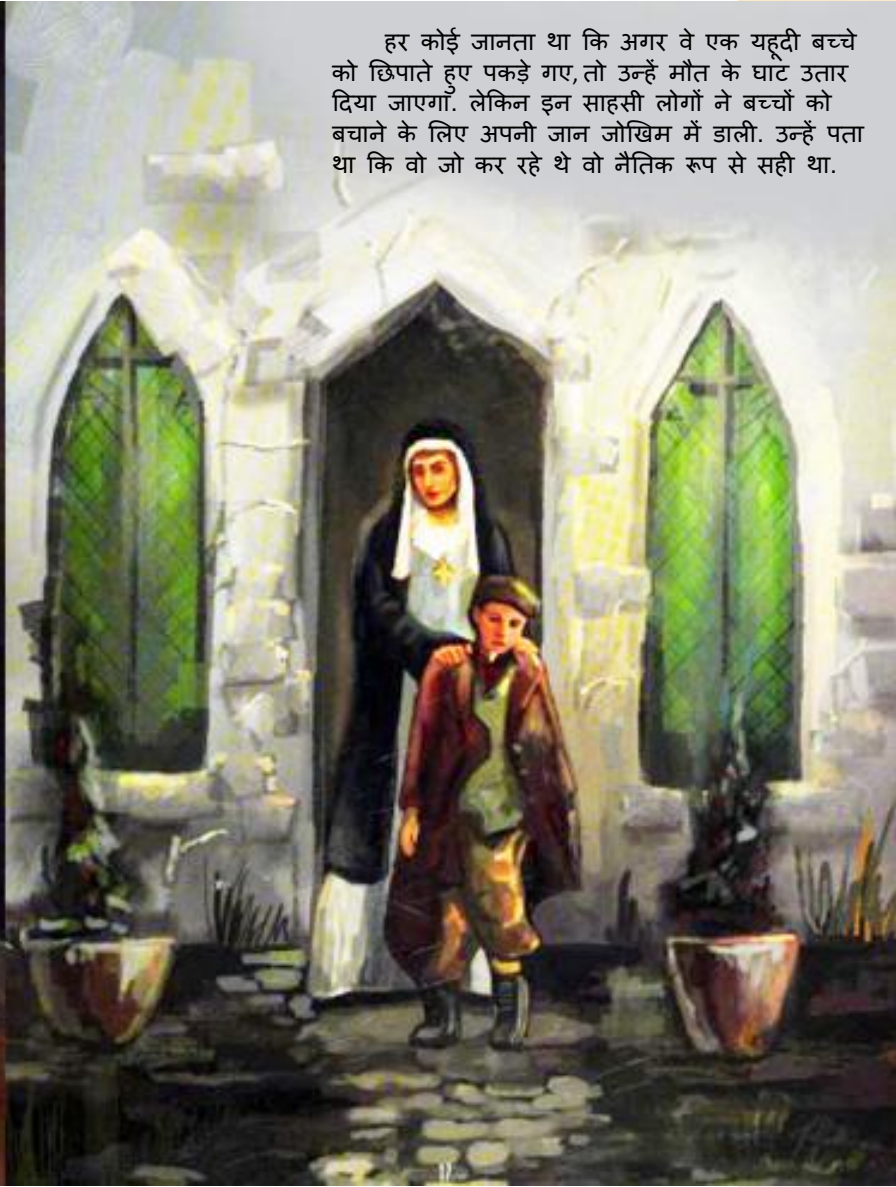
इरीना ने रिकॉर्ड रखा.

इरीना और उसके सहायकों ने न केवल बच्चों को बचाया, उन्होंने यह सुनिश्चित किया कि प्रत्येक बच्चा सुरक्षित रहे और उसकी अच्छी तरह से देखभाल हो. इरीना और उसके सहायकों ने बच्चों की देखभाल करने वाले पालक परिवारों को पैसे, आपूर्ति और भोजन भी पहुँचाया.

"बच्चे अब अच्छे हाथों में हैं." इरीना ने अपनी दोस्त जग को बताया. "लेकिन जब युद्ध समाप्त हो जाएगा, तो उन्हें अपने माता-पिता के साथ फिर से मिलना होगा. मैं बच्चों के असली नाम, उनके नए नाम और वे कहां-कहां हैं उसकी एक सूची बना रही हूँ."

"ठीक है," जग ने कहा. "अगर नाजियों को सूचियां मिल गई तो वे हमें मार सकते हैं और बच्चों और उनकी देखभाल करने वालों को भी निशाना बना सकते हैं."

"हर बच्चे को अपना असली नाम जानने का हक है," इरीना ने जोर दिया. "और बाद में बच्चों के परिवार उन्हें ढूंढना चाहेंगे. लेकिन तुम सही कह रही हो - इस तरह की सूची बहुत खतरनाक होगी, और हमें बेहद सावधान रहने की जरूरत होगी."
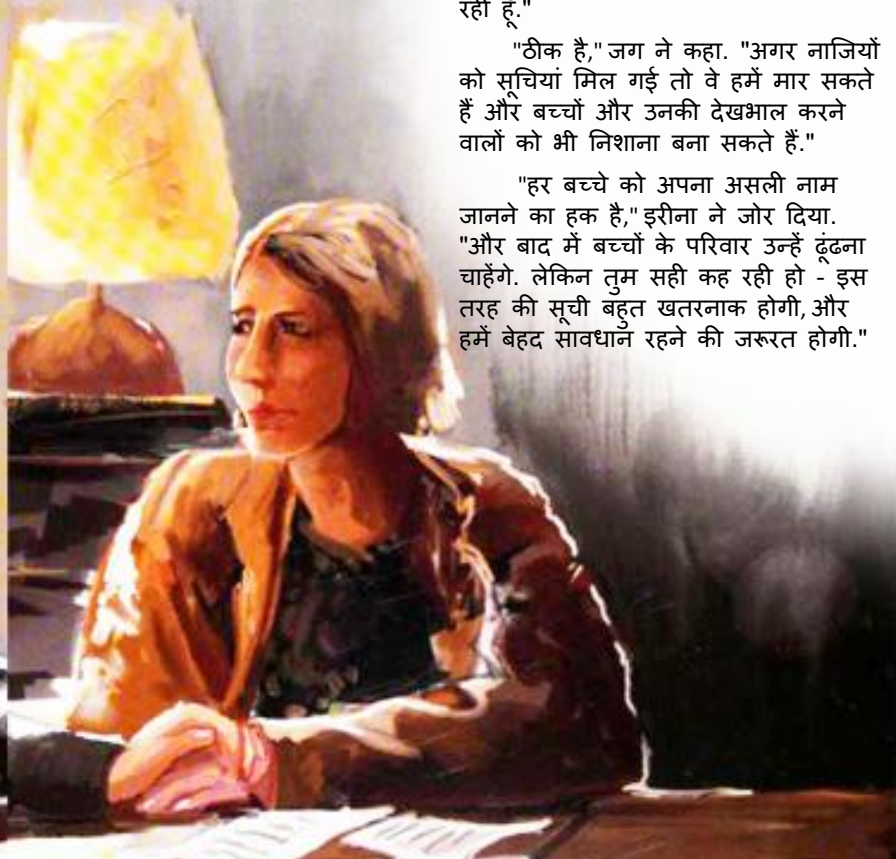
इरीना का अपार्टमेंट, अक्टूबर 20,1943

इरीना पकड़ी गई.

इरीना हमेशा से जानती थी कि बच्चों को बचाना बहुत बड़े जोखिम का काम था. अब उसका सबसे बड़ा डर सच होने वाला था.

खट! खट! खट!

"जल्दी खोलो!" एक आदमी चिल्लाया, दरवाजे पर तेज़ दस्तक हुई.

"वो गेस्टापो (जर्मन खुफ़िआ पुलिस) होगी!" इरीना धीमे से फुसफुसाई.

इरीना ने अपनी सूचियाँ हाथ में पकड़ीं और वो उन्हें बाहर फेंकने के लिए खिड़की के पास गई. लेकिन खिड़की के बाहर भी गुप्त पुलिस इंतज़ार कर रही थी! इरीना की इमारत को घेर लिया गया था!

खट! खट! खट!

इरीना ने नामों की सूची जेनिना के सामने फेंक दी. जेनिना, एक दोस्त थी जो उसके साथ रह रही थी. जेनिना ने सूचियों को कपड़ों के भीतर अपनी बगल के नीचे दबा लिया. उसके बाद इरीना ने दरवाजा खोला.
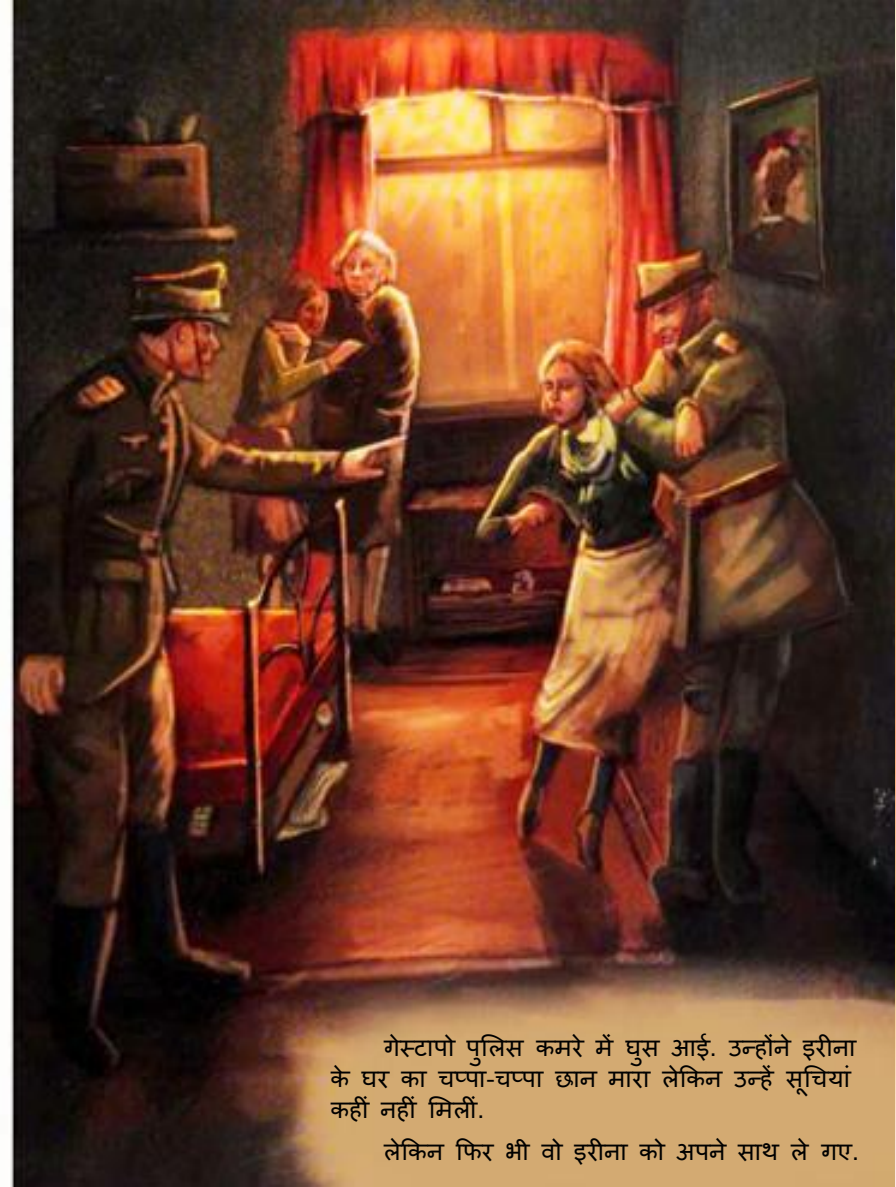
गेस्टापो पुलिस कमरे में घुस आई. उन्होंने इरीना के घर का चप्पा-चप्पा छान मारा लेकिन उन्हें सूचियां कहीं नहीं मिलीं.

लेकिन फिर भी वो इरीना को अपने साथ ले गए.

पाविक जेल, अक्टूबर 1913

इरीना जेल गई.

पाविक जेल वो जगह थी जहां गेस्टापो, नाज़ी कानून तोड़ने वाले किसी भी व्यक्ति से पूछताछ करके उसे दंडित कर सकती थी.

"हमें बताओ कि तुम ज़ेगोटा के बारे में क्या जानती हो," गेस्टापो के पुलिसकर्मी ने पूछा.

"मैं कुछ भी नहीं जानती," इरीना ने उत्तर दिया. "मैं सिर्फ एक सामाजिक कार्यकर्ता हूं."

गेस्टापो पुलिस ने इरीना की टांगों और पैरों को पहले चाबुक से मारा, फिर उसे एक बेल्ट से पीटा.

लेकिन इरीना चुप रही. जेल में इरीना के दिन हमेशा एक जैसे होते थे.

जेल में इरीना दिन में 12 घंटे कपड़े धोने का काम करती थी. फिर उससे ज़ेगोटा के दोस्तों का नाम बताने के लिए पूछताछ की जाती थी और उसे पीटा जाता था. उसे बहुत कम खाना मिलता था. भूख और दर्द के कारण उसे रात को अच्छी नींद भी नहीं आती थी. इस दिन, महीनों में बदले - और 3 महीने बीते.
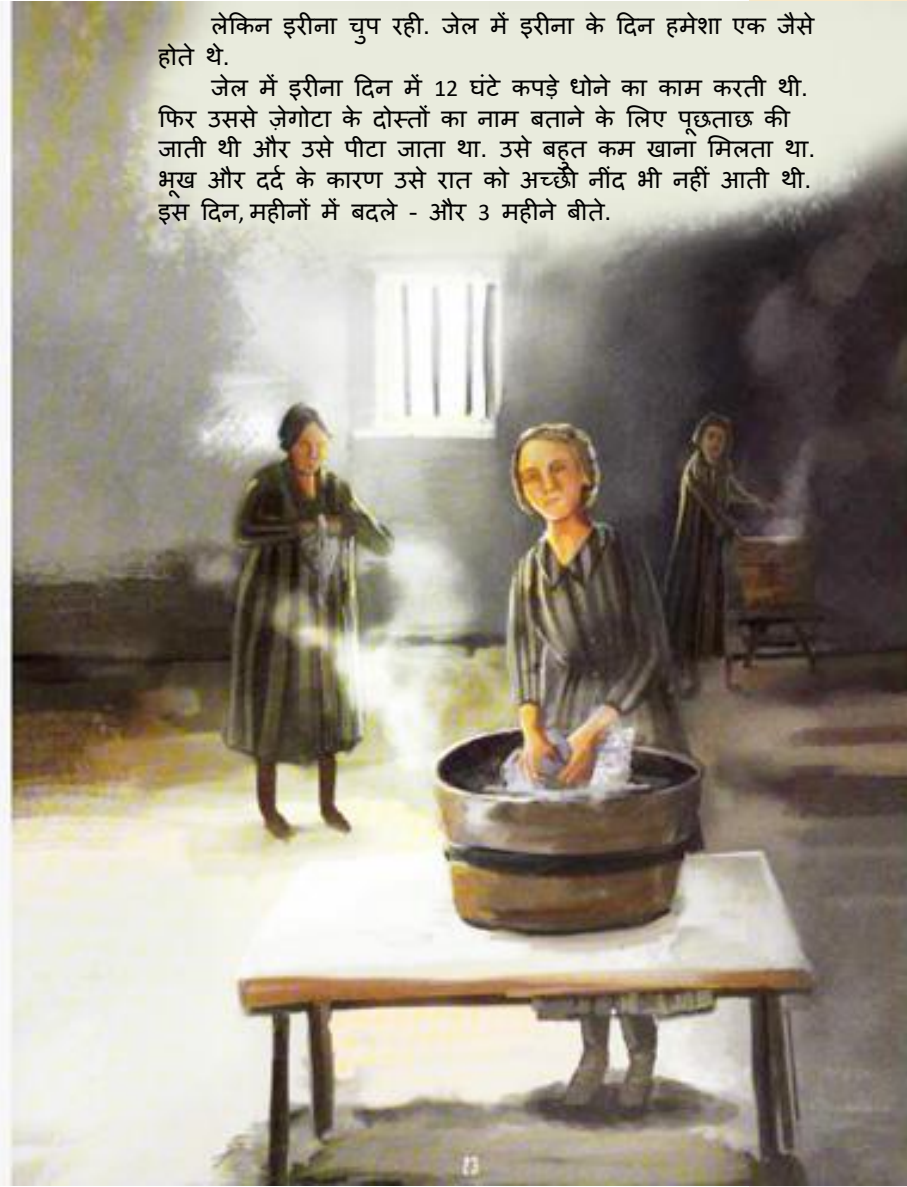
पाविक जेल, जनवरी 1944

इरीना का नाम पुकारा गया.

"इरीना सेंडलर!" एक गार्ड चिल्लाया.

अन्य महिलाओं के साथ इरीना को एक ट्रक में धकेल दिया गया. उन्हें गेस्टापो मुख्यालय ले जाया गया.

"अब हमें मौत के घाट उतारा जाएगा," इरीना ने सोचा. "मुझे गर्व है कि मैंने कोई जानकारी नहीं दी. मैं मौत से नहीं डरती हूँ."

इरीना को एक कमरे में धकेल दिया गया जहाँ वो घुटनों के बल गिर गई. एक अधिकारी ने उसे खींचा और फिर वो उसे एक दरवाजे में से ले गया.

"अब तुम स्वतंत्र हो," अधिकारी ने पोलिश में कहा. "यहाँ से जितनी जल्दी हो सके, भाग जाओ."

इरीना लंगड़ाती हुई अपने क्षतिग्रस्त पैरों पर ठोकर खाकर एक गली में गिर गई. तभी बादलों के पीछे से सूरज बाहर निकला. इरीना एक पल के लिए अंधी हो गई. उसने पिछले 100 दिनों से सूरज तक नहीं देखा था.

इरीना छिप गई.

ज़ेगोटा ने इरीना को मुक्त कराने के लिए जर्मन अधिकारियों को बहुत पैसा खिलाया था. लेकिन अब उसे छिपना ज़रूरी था क्योंकि नाजियों का मानना था कि वो मर चुकी थी.

इरीना दोस्तों के घरों में छिपकर रही. कुछ दिनों के लिए, वो वारसॉ चिड़ियाघर में भी छिपी, जहाँ वो लोमड़ी के बच्चों के साथ एक पिंजरे में सोई. लेकिन उसने ज़ेगोटा के साथ अपना काम जारी रखा. उसकी दोस्त ने अभी भी उन बच्चों की सूचियों को बचाकर बहुत संभाल कर रखा था.

गर्मी के दिन, 1944

इरीना ने सूचियां छिपा दीं.

वारसॉ विद्रोह शुरू हो गया था. सड़कों पर लड़ाई चल रही थी. इरीना यह सुनिश्चित करना चाहती थी कि चाहें कुछ भी हो उसकी सूचियाँ सुरक्षित रहें.

एक दिन आधी रात के समय इरीना और जग, जग के घर के बाहर पिछवाड़े में छिप गए. दोनों दोस्तों ने मिलकर चाकू और एक चम्मच से सख्त जमीन को खोदकर एक गड्ढा बनाया. इरीना ने तीन डिब्बे उस गड्ढे में रखे और फिर उन्हें मिट्टी से ढक दिया. अब सूचियां सुरक्षित थीं, उन डिब्बों में बच्चों के नाम थे. वे आशा और उम्मीद के डिब्बे थे.

अंत के शब्द

युद्ध की समाप्ति के बाद इरीना की सूची एक ऐसे संगठन को दी गई थी जो जीवित बचे यहूदी लोगों को उनके परिवारों से जोड़ने में मदद कर रहा था. अफसोस की बात यह थी कि ज्यादातर बच्चों के माता-पिता की मृत्यु हो गई थी. लेकिन कुछ अभी भी जीवित थे और इरीना की सूचियों के कारण वे अपने बच्चों को ढूंढ पाए.

कुछ बच्चों ने अपने वास्तविक इतिहास और अपने माता-पिता के साहसपूर्ण निर्णय के बारे में सीखा कि कैसे उन्होंने अपने बच्चों की जान बचाने के लिए उन्हें त्यागा था. और दूसरों ने इरीना को याद किया - उस साहसी और सुकून देने वाली महिला को जो उन्हें स्वतंत्रता की ओर ले गई.

बरसों बाद लोगों ने पूछा, "इरीना, आपने ऐसा क्यों किया? आपने यहूदी बच्चों को बचाने के लिए अपनी जान जोखिम में क्यों डाली?"

"जर्मन कब्जे के दौरान," इरीना ने जवाब दिया. "मैंने देखा कि पोलिश राष्ट्र डूब रहा था, और यहूदियों की सबसे दयनीय स्थिति थी. और जिन्हें सबसे ज्यादा मदद की जरूरत थी, वे थे बच्चे. इसलिए, मुझे उनकी मदद करनी ही पड़ी."

12 मई 2008 को इरीना अपनी दोस्त बिएटा के साथ नाश्ता कर रही थी. यह वही बिएटा थी जिसे एक बच्चे के रूप में यहूदी बस्ती से एक टूलबॉक्स में रखकर निकाला गया था. बड़ी होने पर बिएटा ने पाया कि युद्ध में उसने अपने माता-पिता को खो दिया था. लेकिन उसके पास अभी भी उन्हें याद करने के लिए उनका दिया एक चम्मच था. इरीना की उम्र अब 98 साल की थी. वो अच्छे मूड में थीं और दोनों दोस्तों ने आपस में बातें कीं. फिर इरीना ने अपनी आँखें बंद कीं और शांति से अपना देह त्याग दिया.

इरीना सेंडलर को इजरायल में होलोकॉस्ट मे मदद के लिए यहूदी लोगों के जीवित स्मारक, "याद वाशेम" द्वारा सम्मानित किया गया.

"जो कोई एक इंसान के जीवन को बचाता है, तो वो पूरे ब्रह्मांड को बचाता है." इरीना ने कभी भी खुद को हीरो नहीं माना.

इरीना ने कहा, "पहले मैं यह बता दूँ कि मेरे कई मददगार थे. दुनिया को उन्हें कभी नहीं भूलना चाहिए. यह सच नहीं है कि वो एक वीरतापूर्ण कार्य था. उसके लिए केवल सहृदयता और एक सरल स्वाभाव की आवश्यकता थी."

लेखक का नोट

1999 में यूनियन-टाउन, कंसास के नौवीं कक्षा के छात्र ने, इरीना सेंडलर नाम की एक पोलिश महिला के बारे में समाचार पत्र में एक लेख पढ़ा. इरीना ने 2,500 से अधिक बच्चों को नाजियों से बचाया था.

"यह कैसे कि मैंने उसके बारे में पहले कभी नहीं सुना?" एलिजाबेथ ने सोचा.

उसने अपने आसपास के सभी लोगों से पूछा. पर इरीना सेंडलर के बारे में कोई नहीं जानता था. अपने शिक्षक मिस्टर कोनार्ड की मदद से और दो अन्य छात्रों, मेगन स्टीवर्ट और सबरीना कॉन्स के साथ मिलकर एलिजाबेथ ने इरीना के वीर कृत्यों के बारे में एक छोटा नाटक लिखा और उसका प्रदर्शन किया.

एलिजाबेथ, मेगन और सबरीना को उनके नाटक के लिए कई पुरस्कार मिले. नाटक का प्रदर्शन करने और इरीना की कहानी बताने के लिए और कई छात्र भी उनके साथ जुड़े.

बाद में एलिजाबेथ, मेगन और सबरीना पोलैंड गए और वहां पर इरीना सेंडलर से मिले. हालाँकि इरीना अब बूढ़ी हो चुकी थीं, फिर भी उनकी आँखों में चमक और बच्चों के प्रति वही प्यार था.

इरीना इस बात का जीता-जागता सबूत थीं कि होलोकॉस्ट सिर्फ कुछ ऐसा नहीं था जिसे आप सिर्फ इतिहास की किताबों में पढ़ें. होलोकॉस्ट वास्तविक था, और वो हादसा वास्तविक लोगों के साथ हुआ.

जेनिफर रॉय